भारतीय ज्ञान परंपरा

संस्कृति, दर्शन, शैक्षिक विचारधाराएँ और नवाचार

सम्पादक :
डॉ. दिनेश चन्द्र शर्मा

भारतीय ज्ञान परंपरा :

संस्कृति, दर्शन, शिक्षा विचारधाराएँ और नवाचार

सम्पादक :

डॉ. दिनेश चन्द्र शर्मा

Ph.D., D.Lit. (Sub.)

निदेशक, कॉम्पिटिशन प्लस ग्रुप ऑफ इन्स्टीट्यूशन,

अजमेर

छवि पब्लिकेशन्स

अजमेर-305001

प्रकाशक :
छवि पब्लिकेशन्स
अजमेर-305001
मो. 9660111549

संस्करण :
प्रथम 2022-2023

ISBN : 978 - 81 - 89435 - 64 - 6

मूल्य - 300/-

रचना - भारतीय ज्ञान परम्परा में शिक्षा के समाजशास्त्रीय आधार

सम्पादक - डॉ. दिनेश चन्द्र शर्मा

मुद्रक - श्रीनिवास प्रिन्टोग्राफिक्स, अजमेर

23. भारतीय ज्ञान परम्परा में शिक्षा के स्रोत ग्रन्थ

कमलेश कुमार अटल
सहायक आचार्य (शिक्षा विभाग)
हुकुमचन्द नोबेल इंस्टीट्यूट ऑफ साईंस एण्ड टेक्नोलॉजी, अजमेर

भारतीय ज्ञान परंपरा विश्व की सबसे प्राचीन और समृद्ध शैक्षिक परंपराओं में से एक है। यह केवल धार्मिक या आध्यात्मिक ज्ञान का संग्रह नहीं है, बल्कि मानव जीवन के हर क्षेत्र में मार्गदर्शन करने वाली प्रणाली है। प्राचीन भारत में शिक्षा का उद्देश्य केवल सूचना प्राप्त करना नहीं था, बल्कि व्यक्ति के संपूर्ण विकास, सामाजिक उत्तरदायित्व, नैतिकता और आध्यात्मिक जागरूकता का निर्माण करना था।

भारतीय शिक्षा प्रणाली में शिक्षा का स्वरूप जीवनोपयोगी, अनुभवात्मक और बहुआयामी रहा। प्रत्येक स्रोत ने शिक्षा को केवल शाब्दिक ज्ञान नहीं, बल्कि अनुभव, आचार, नैतिकता, योग, ध्यान और चरित्र निर्माण का माध्यम बनाया। इस परंपरा में गुरु, ग्रंथ, आश्रम, प्रकृति, यज्ञ, समाज, कला और विज्ञान सभी शिक्षा के सजीव स्रोत रहे।

वेद और उपनिषद :- वेद भारतीय शिक्षा का सबसे प्राचीन और प्रतिष्ठित स्रोत हैं। ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद में जीवन, धर्म, विज्ञान, गणित, खगोल, संगीत, योग और समाजशास्त्र का समग्र ज्ञान है। वेदों में शिक्षा का मूल आधार श्रवण, मनन और ध्यान है। विद्यार्थी पहले गुरु से श्रवण करता है, फिर उसके अर्थ पर मनन करता है, और अंततः ध्यान द्वारा ज्ञान को आत्मसात करता है।

उपनिषदों में शिक्षा का लक्ष्य केवल सूचना प्राप्त करना नहीं, बल्कि आत्मज्ञान और ब्रह्मज्ञान प्राप्त करना है। उपनिषद शिक्षा के माध्यम से व्यक्तित्व का संपूर्ण विकास और आत्मसाक्षात्कार प्रदान करते हैं।

वेदों और उपनिषदों में शिक्षा केवल ग्रंथ अध्ययन तक सीमित नहीं थी। इसमें संगीत, मंत्र, कर्मकाण्ड, योग और ध्यान भी शामिल थे, जिससे विद्यार्थी के शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास की शिक्षा दी जाती थी।

स्मृति ग्रंथ और शास्त्र :- स्मृति ग्रंथ और शास्त्र भारतीय शिक्षा का प्रमुख आधार रहे। मनुस्मृति, याज्ञवल्क्य स्मृति, नारद स्मृति, कौटिल्य अर्थशास्त्र, अष्टाध्यायी और धर्मशास्त्र केवल नियमों का संग्रह नहीं, बल्कि सामाजिक, नैतिक और प्रशासनिक शिक्षा का माध्यम थे।

इन ग्रंथों में विद्यार्थियों को नैतिकता, अनुशासन, कर्तव्य, धर्म और न्याय का महत्व सिखाया जाता था। विद्यार्थी केवल विद्या अर्जित नहीं करता था, बल्कि जीवन में व्यवहारिक ज्ञान और नैतिक मूल्यों को अपनाना भी सीखता था। कौटिल्य अर्थशास्त्र विद्यार्थियों को प्रशासन, कूटनीति, नीति और राज्यव्यवस्था का व्यावहारिक ज्ञान प्रदान करता था।

गुरु और आश्रम प्रणाली :- भारतीय शिक्षा में गुरु का स्थान सर्वोच्च रहा। गुरु केवल शिक्षक नहीं, बल्कि जीवन के मार्गदर्शक, नैतिक संरक्षक और आध्यात्मिक शिक्षक भी होता था। गुरु-शिष्य परंपरा में शिक्षा व्यक्तिगत, अनुभवात्मक और चरित्र निर्माण पर आधारित होती थी।

आश्रम प्रणाली में विद्यार्थी प्राकृतिक वातावरण में रहकर शिक्षा प्राप्त करता था। यहाँ न केवल शास्त्रों का अध्ययन होता था, बल्कि कर्म, योग, सामाजिक अनुशासन, जीवन कौशल और चरित्र निर्माण की शिक्षा भी दी जाती थी। आश्रम प्रणाली में विद्यार्थी जीवन के प्रत्येक पहलू को अनुभव करके सीखता था।

भाषा और साहित्य := भारतीय शिक्षा में भाषा और साहित्य का विशेष महत्व है। संस्कृत, प्राकृत, तमिल और क्षेत्रीय भाषाओं में लिखित ग्रंथों ने ज्ञान का प्रसार किया। वेद, उपनिषद, पुराण, महाभारत, रामायण, नाटक, कविता, नाट्यशास्त्र, और विज्ञानग्रंथ शिक्षा के प्रमुख रीत रहे।

भाषा केवल संचार का माध्यम नहीं थी, बल्कि यह ज्ञान, तर्क और अनुभव की अभिव्यक्ति का माध्यम भी थी। साहित्य और महाकाव्यों के माध्यम से विद्याथीज़ नैतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक शिक्षा ग्रहण करता था।

यज्ञ और सामाजिक संस्थाएँ :- यज्ञ भारतीय शिक्षा का अभिन्न स्रोत रहा। यज्ञ केवल धार्मिक क्रिया नहीं थी, बल्कि इसमें विद्यार्थियों को विभिन्न विधाओं, संस्कारों और नैतिक मूल्यों का प्रत्यक्ष अनुभव कराया जाता था।

सामाजिक संस्थाएँ जैसे ग्राम सभा, स्रोत और धार्मिक संगठन शिक्षा का माध्यम बनी। ये संस्थाएँ विद्यार्थियों को सामाजिक और व्यवहारिक शिक्षा प्रदान करती थीं।

प्रत्यक्ष अनुभव और प्रकृति :- प्रकृति और प्रत्यक्ष अनुभव भारतीय शिक्षा के महत्वपूर्ण स्रोत रहे हैं। नदियाँ, पर्वत, वन, मौसम और जलवायु का अध्ययन केवल ज्ञान प्राप्ति का माध्यम नहीं था, बल्कि जीवन कौशल, पयाज़्वरणीय ज्ञान और वैज्ञानिक दृष्टि का आधार भी था।

विद्यार्थी प्रकृति का अवलोकन करके गणित, खगोल, आयुर्वेद, वनस्पति और रसायन शास्त्र का अध्ययन करता था। प्राकृतिक घटनाओं, जल, वायु, सूयज़ और नक्षत्रों के अध्ययन से तर्क, विश्लेषण और पर्यावरणीय चेतना विकसित होती थी।

मंत्र और संगीत :- मंत्र और संगीत शिक्षा के सजीव स्रोत रहे। मंत्रों के उच्चारण और ध्यान के माध्यम से स्मृति, तर्क और मानसिक अनुशासन विकसित होता था। संगीत और वाद्ययंत्र विद्यार्थियों में भावनात्मक संतुलन, रचनात्मकता और सांगीतिक कौशल पैदा करते थे।

पुराण और महाकाव्य :- महाभारत, रामायण और पुराण शिक्षा का महत्वपूर्ण स्रोत रहे। ये ग्रंथ धार्मिक, नैतिक, प्रशासनिक, सामाजिक और युद्धकला के ज्ञान के स्रोत हैं। कथा, पात्र और घटनाओं के माध्यम से शिक्षा अनुभवात्मक और नैतिक दृष्टि से प्रभावशाली बनती थी।

योग और ध्यान :- योग और ध्यान भारतीय शिक्षा के अभिन्न स्रोत रहे। योग केवल शारीरिक अभ्यास नहीं, बल्कि मानसिक और आध्यात्मिक विकास का माध्यम था। ध्यान, प्राणायाम और साधना विद्यार्थियों को आत्मसाक्षात्कार, मानसिक स्थिरता और नैतिकता प्रदान करते थे।

अर्थशास्त्र और नीति शिक्षा :- कौटिल्य अर्थशास्त्र और चाणक्य नीति विद्यार्थियों को राजनीति, प्रशासन, न्याय और सामाजिक व्यवहार की शिक्षा देती थीं। शिक्षा का उद्देश्य केवल धामिज़्क या आध्यात्मिक नहीं, बल्कि व्यावहारिक और प्रशासनिक भी था।

विज्ञान और गणित :- वैदिक गणित, खगोलशास्त्र, आयुर्वेद और रसायन शास्त्र शिक्षा के ीित रहे। विद्यार्थियों में तर्क, विश्लेषण, समस्या समाधान और वैज्ञानिक दृष्टि का विकास इन स्रोतों से होता था।

संस्कृति और नैतिक शिक्षा :- सांस्कृतिक और नैतिक शिक्षा का उद्देश्य चरित्र निर्माण, सामाजिक जिम्मेदारी और नैतिक चेतना विकसित करना था। सांस्कृतिक गतिविधियाँ, नाटक, संगीत और सामाजिक आयोजन शिक्षा के जीवंत स्रोत बने।

आधुनिक शिक्षा में योगदान :- भारतीय ज्ञान परंपरा ने आधुनिक शिक्षा प्रणाली को गहन रूप से प्रभावित किया। गुरुकुल, आश्रम शिक्षा, योग, विज्ञान, गणित, साहित्य और कला ने आधुनिक विद्यालय और विश्वविद्यालयों की नींव रखी।

निष्कर्षत: भारतीय शिक्षा के स्रोत बहुआयामी, सजीव और समग्र हैं। वेद, उपनिषद, स्मृति ग्रंथ, गुरु, आश्रम, प्रकृति, यज्ञ, संगीत, महाकाव्य, योग, विज्ञान और संस्कृति शिक्षा के अभिन्न अंग हैं। शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान अर्जन नहीं, बल्कि चरित्र निर्माण, नैतिकता, सामाजिक उत्तरदायित्व, आध्यात्मिक जागरूकता और जीवन कौशल का विकास है।

❑❑❑